HINDUSTAN TIMES 09-7-2013

Diversification plan to up sugar mills' profits

HT Correspondent
htcitykanpur@hindustantimes.com

KANPUR: The UP Cooperative Sugar Factories Federation (UPCSFF) had decided to introduce a diversification plan in its 23 plants to increase profits, revealed managing director BK Yadav on Monday.

As part of the plan, co-power generation plant would be installed at the two sugar factories in Bijnaur and a distillery unit would be set up at one more factory in the same district. Besides, ethanol production units would be set up at the four sugar factories in Bharaich, Saharanpur, Kayamganj and Bulendshahar, the MD said.

Yadav, who was in the city to inaugurate a five-day refresher course for sugar technologists and administrative officers at the National Sugar Institute, said a detailed project report (DPR) on the diversification programme has already been submitted to the state government for its approval. The plan would be implemented in phases soon after getting approval.

In the first phase, the plan would be introduced in seven sugar factories situated in Bijnaur, Bagpat, Bharaich, Saharanpur and Bundelkhand.

The federation also plans to introduce measures for cutting down production cost of sugar by reducing the time between cutting and crushing of the cane and taking better quality sugarcane from the farmers.

Meanwhile, during the inaugural session of the course, NSI director Narendra Mohan said the sugar industry should be viewed as a complex and production of value added products, like ethanol, citric acid, power and furfural, should be ensured along with sugar production.

About 70 delegates from UP, Bihar, Haryana, Punjab, Maharashtra, Gujarat, Karnataka and Andhra Pradesh are participating in the refresher course.

ON THE ANVIL

MD of UPCSFF Limited addressing an event on Monday. HT PHOTO

- As part of the plan, co-power generation plant would be installed at the two sugar factories in Bijnaur and a distillery unit would be set up at one more factory in the same district.
- Besides, ethanol production units would be set up at the four sugar factories in Bharaich, Saharanpur, Kayamganj and Bulendshahar, the MD of UPCSFF said.

हिन्दुस्तान 09-7-2013

सूबे की 23 चीनी मिलों का विविधीकरण होगा

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

अब चीनी मिलों को 'शुगर कॉम्प्लेक्स' में बदलने की जरूरत है। इससे चीनी की उत्पादन लागत कम आएगी और मिलें लाभ में चलने लगेंगी। प्रदेश की 23 चीनी मिलों में इसके लिए विविधीकरण योजना शीघ्र ही शुरू की जाएगी। यह मिलें चीनी के साथ बिजली, एथनॉल और कई उपयोगी कीमती रसायनों का उत्पादन भी कर सकेंगी।

राष्ट्रीय शर्करा संस्था (एनएसआई) में सोमवार से शुरू पांच दिवसीय राष्ट्रीय रिफ्रेशर कोर्स का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश सहकारी चीनी मिल संघ, लखनऊ के प्रबंध निदेशक डॉ. बीके यादव ने कहा कि पहले चरण में चीनी मिलों के विविधीकरण की योजना को सात चीनी मिलों में अपनाया जाएगा। इसमें बिजनौर, बागपत, बहराइच, सहारनपुर और बुन्देलखण्ड की चीनी मिलें शामिल हैं।

श्री यादव ने कहा कि विविधीकरण की विस्तृत योजना शासन को सौंपी जा चुकी है। सरकार से इसका अनुमोदन मिलते ही काम शुरू हो जाएगा। योजना के अन्तर्गत बिजनौर की दो चीनी मिलों में सह-पावर प्लांट लगाए जाएंगे। यहां चीनी उत्पादन के साथ बिजली पैदा की जाएगी और एथनॉल का भी उत्पादन किया जाएगा। बहराइच, सहारनपुर, कायमगंज और बुलन्दशहर में भी एथनॉल उत्पादन की इकाइयां लगाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि अगर गन्ने की कटान और क्रशिंग के समय में कमी लाई जा सके तो चीनी उत्पादन की लागत कम हो सकती है।

निदेशक डॉ. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि एक चीनी मिल केवल चीनी का उत्पादन नहीं करती बल्कि बिजली, एथनॉल के अतिरिक्त फरफुराल जैसे कीमती रसायनों का उत्पादन भी करती है। अब समय केवल चीनी मिलों का नहीं है बल्कि शुगर कॉम्प्लेक्स का है। ब्राजील में तो एथनॉल की कीमत बढ़ते ही लोग शीरे से चीनी नहीं एथनॉल बनाने लगते हैं। रिफ्रेशर कोर्स में उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश से करीब 70 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्रमुख बातें

- देश में 3500 लाख टन गन्ने का उत्पादन होता है जबकि प्रदेश में 85 लाख टन तक उत्पादन होता है
- देश में 230 लाख टन चीनी की खपत है। कभी देश में 383 लाख टन तक उत्पादन होता है और कभी मांग से काफी कम
- ऑयल कंपनियों को 5950 मिलियन लीटर एथनॉल चाहिए लेकिन इसका एक चौथाई भी नहीं मिल पाता
- एक टन गन्ने से 300 मेगावॉट बिजली मिल सकती है, 2500 टन क्षमता वाली इकाई आठ मेगावॉट अतिरिक्त बिजली दे सकती है

डॉ. बीके यादव

मिलेगी सौगात

- शुगर कॉम्प्लेक्स बने तो बढ़ेगी चीनी मिलों की 'मिठास'
- मिलें चीनी के साथ ही कई उपयोगी रसायनों का उत्पादन भी कर सकेंगी

राष्ट्रीय सहारा 09-7-2013

बेहतर प्रबंधन से बढ़ सकती है चीनी मिलों में रिकवरी

कानपुर (एसएनबी)। बेहतर प्रबंधन के द्वारा चीनी मिल में रिकवरी लगभग एक यूनिट बढ़ायी जा सकती है। यह बात उत्तर प्रदेश सहकारी चीनी मिल संघ के प्रबंध निदेशक डा. बीके यादव ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में आयोजित पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स के उद्घाटन अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि इस रिफ्रेशर कोर्स से अधिकाधिक चीनी मिलों को लाभ मिलेगा। उन्होंने गन्ने की उच्च शुगर मात्रा वाली प्रजातियों के विकास पर बल देते हुए कहा कि इससे लगातार बढ़ रही चीनी की जरूरत को पूरा किया जा सकेगा, जो 2025 तक 370 लाख टन तक पहुंच जायेगी। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने प्रतिभागियों को सलाह दी कि इस रिफ्रेशनर कोर्स से अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करें तथा इसका प्रयोग चीनी मिलों की बेहतरी के लिए करें। चीनी मिलों के सह-उत्पादों का बेहतर तरीके से इस्तेमाल कर गन्ने की लागत में कमी लायी जा सकती है।

रिफ्रेशर कोर्स के पहले दिन प्रतिभागियों को तीन विषयों में दी गयी जानकारी

संस्थान में आयोजित होने वाले रिफ्रेशर कोर्स में देश के विभिन्न भागों (बिहार, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश आदि राज्यों) से लगभग 70 प्रतिभागी हिस्सा लेने पहुंचे हैं, जिसमें चीनी मिलों के शुगर टेक्नोलॉजिस्ट, शुगर इंजीनियर एवं मुख्य इंजीनियर हैं। रिफ्रेशर कोर्स में 18 लेक्चर दिये जायेंगे। पहले दिन तीन विषयों पर लेक्चर दिये गये, जिसमें टेक्निक्स फार इम्प्रूविंग मिलिंग परफारमेंस पर एचएन गुप्ता ने प्रतिभागियों को जानकारी दी। दूसरा लेक्चर कोजनरेशन इन शुगर इंडस्ट्री पर डा. स्वेन ने दिये। तीसरा लेक्चर करोजन इन केन शुगर इंडस्ट्री विषय पर डॉ. ए वाजपेयी ने दिया।

कल्याणपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में रिफ्रेशर कोर्स के शुभारंभ पर जानकारी देते डा.बीके यादव। *फोटो : एसएनबी*

आज 09-7-2013

गन्नें के खोये से बिजली, चीनी उद्योग के लिए शुगर कॉम्प्लेक्स जरूरी

कानपुर, 8 जुलाई। नेशनल शर्करा संस्थान, कल्याणपुर के सभागार में आयोजित पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स का उद्घाटन करते हुए उ.प्र. सहकारी चीनी मिल संघ, लखनऊ के प्रबन्ध निदेशक डॉ. बी.के. यादव ने चीनी मिलों द्वारा बेहतर गन्ना प्रबन्धन की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है और गन्ने की उच्च शुगर मात्रा वाली प्रजातियों के विकास पर जोर दिया है। गन्ने के खोये से बिजली और चीनी उद्योग के लिए शुगर कॉम्प्लेक्स की स्थापना जरुरी है। उन्होंने कहा कि देश में लगातार चीनी की डिमांड बढ़ने पर सन २०२५ तक ३७० लाख टन चीनी की आवश्यकता होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने इस रिफ्रेशर कोर्स में दिये गये व्याख्यानों से अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करें। नॉलेज बढ़ने से चीनी मिलों में शुगर के उत्पादन बढ़ने और उन्हें लाभ पहुंचाने में मदद मिलेगी। चीनी मिलों के सह उत्पादों (बगास और मोलेसिस) का इस्तेमाल करने से गन्ने की लागत में कमी आएगी। उन्होंने कहाकि चीनी के अतिरिक्त एथेनॉल, साइट्रिक एसिड व एसीटिक एसिड, फरफ्यूरल जैसी रसायनों के अतिरिक्त गन्नें की खोये से बिजली का उत्पादन भी किया जा सकेगा। दोपहर में टेक्निकल फॉर इम्प्रूविंग मिलिंग, परफार्मेंस, को जनरेशन इन शुगर इंडस्ट्री, करोजन इन केन शुगर इण्डस्ट्री विषयों पर एच.एन. गुप्ता, डा.स्वेन एवं डा. ए. लाजपेयी ने अपने व्याख्यान दिये।

दैनिक जागरण 09-7-2013

2025 तक 370 लाख टन चीनी का लक्ष्य

कानपुर,नगर प्रतिनिधि: गन्ने की उच्च गुणवत्ता वाली प्रजातियों के बूते ही वर्ष 2025 तक 370 लाख टन चीनी का लक्ष्य हासिल किया जा सकेगा।

यह बात मुख्य अतिथि डॉ. बीके यादव प्रबंध निदेशक उत्तर प्रदेश सहकारी चीनी मिल संघ ने कही। राष्ट्रीय शर्करा संस्था (एनएसआई) में आयोजित रिफ्रेशर के उद्घाटन सत्र में श्री यादव ने बताया कि गन्ने के बेहतर प्रबंधन से चीनी मिल में जहां रिकबरी लगभग एक यूनिट तक बढ़ाई जा सकती है वहीं गन्ने के उच्च शर्करा वाली प्रजातियों के उपयोग पर जोर देना होगा। अध्यक्षता करते हुए निदेशक नरेंद्र मोहन अग्रवाल ने कहा कि चीनी का उत्पादन और बढ़ेगा तो उपभोक्ता की जेब पर भार कम होगा, ब्राजील व आस्ट्रेलिया की तर्ज पर देश में रिफाइंड चीनी बननी चाहिए ताकि इसका निर्यात अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर भी किया जा सके। विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. संतोष कुमार ने बताया कि 12 जुलाई तक चलने वाली कार्यशाला में गुणवत्ता युक्त चीनी के उत्पादन को बढ़ाने के लिए एनएसआई न केवल इंडस्ट्री के साथ प्रौद्योगिकी को साझा करेगा बल्कि चीनी मिल के तकनीशियन एवं इंजीनियरिंग को प्रशिक्षण भी देगा। इसमें कई प्रांतों के चीनी मिलों के मुख्य अभियंता, सहायक अभियंता, चीफ केमिस्ट, प्रोडक्शन मैनेजर एवं तकनीशियन शामिल हुए। आभार प्रदर्शन करते हुए डॉ. स्वाइन ने बताया कि गन्ने की पत्ती हो या खोई जहां बिजली बनाने में काम आती है तो रस से चीनी बनती है। गन्ने की खोई से बिजली बनाने के साथ ही पेंट उद्योग के लिए रसायन बनाने में भी मददगार है।